IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 15, April 2026

Impact Factor: 8.2

शेखावाटी का पर्यटन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित वर्मा

सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

सरांश – यह शोध पत्र राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के पर्यटन का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है शेखावाटी क्षेत्र अपनी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की भव्य हवेलियाँ, भित्ति चित्रकला, मंदिर स्थापत्य, प्राचीन दुर्ग और धार्मिक स्थल इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान को निर्मित करते हैं जिनमें मंडावा, नवलगढ़, फतेहपुर, सीकर, खंडेला, खाटूश्यामजी तथा झुंझुनू जैसे प्रमुख पर्यटन स्थल शेखावाटी के पर्यटन आकर्षण के महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

इस अध्ययन में शेखावाटी क्षेत्र के पर्यटन की वर्तमान स्थिति, पर्यटकों के आगमन से संबंधित आँकड़ों, पर्यटन से प्राप्त आर्थिक एवं सामाजिक लाभों तथा इसके समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संरक्षण की कमी, आधारभूत संरचना की अपर्याप्तता, प्रचार–प्रसार का अभाव तथा निजी स्वामित्व वाली हवेलियों की जीर्ण–शीर्ण अवस्था पर्यटन विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं।

साथ ही यह अध्ययन दर्शाता है कि हेरिटेज होटल के विकास, ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन, स्थानीय कला एवं हस्तशिल्प के संरक्षण तथा परिवहन एवं अवसंरचना में सुधार के माध्यम से शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन के व्यापक विकास की संभावनाएँ मौजूद हैं। अतः यदि सरकार, स्थानीय समुदाय एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ संयुक्त रूप से संरक्षण एवं विकास की दिशा में प्रयास करें तो शेखावाटी क्षेत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है।

विशेष शब्द – शेखावाटी, पर्यटन विकास, भित्ति चित्रकला, हवेलियाँ, सांस्कृतिक धरोहर, हेरिटेज पर्यटन, राजस्थान पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन।

प्रस्तावना – शेखावाटी राजस्थान राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित अर्द्ध–शुष्क भाग है जिसमें मुख्य रूप से सीकर, चूरू और झुंझुनू को शामिल किया जाता है इतिहासकारों की माने तो शेखावाटी क्षेत्र का नाम राव शेखा के नाम पर पड़ा जिसका संबंध आमेर के कच्छावा राजवंश से रहा था।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

''जोधा जी बसायो जोधपुर, जैसलमेर जैसल भाटी,
कच्छावा वीर शेखाजी के नाम से है शेखावाटी
रोहिड़ा का फूल खिले, इतरावै कीकर और जांटी,
आयोडा का मान अठै, आ ठेठ से परिपाटी,
बडी–बडी हेलियां, चिकारी बै पर अनूठी,
आ है म्हारी शेखावाटी.......''!

उपरोक्त पक्तियाँ शेखावाटी के नामकरण से लेकर यहाँ की वनस्पति (रोहिड़ा, कीकर, जांटी), संस्कृति और विरासत को बताती है, अंतिम पंक्ति यहाँ की हवेलियों और उनकी दिवारों पर की गई भित्ति चित्रकारी की बात करती है। यह हवेलियां यहाँ के पर्यटन का प्रमुख केंद्र होने के साथ–साथ विश्व भर में विख्यात है। ना केवल भित्ति चित्र बल्कि यहाँ के प्राचीन धार्मिक स्थल तथा यहाँ की आइकॉनोग्राफी/मूर्ति शिल्प, मंदिर स्थापत्य और प्राचीन दुर्ग भी इस क्षेत्र के इतिहास एवं विरासत को संजोये हुए है, जो की यहाँ के पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक है।

शेखावाटी का इतिहास और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

शेखावाटी का इतिहास मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास से जुड़ा है 15वीं सदी में राव शेखा ने इसकी स्थापना कर अपने नाम से इस क्षेत्र को बसाया था।

18 वीं सदी में यहां के व्यापारियों ने अपनी समृद्धि को दर्शाने के लिए यहां की हवेलियों में भित्ति चित्रण करवाया इन चित्रों का विषय धार्मिक व पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामंती जीवन पर आधारित है यह चित्र फ्रेस्को तकनीकी के उत्तम उदाहरण है और विश्व विख्यात है।

शेखावाटी के प्रमुख पर्यटक स्थल

मंडावा – मंडावा राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित एक शहर है जो की भित्ति चित्रकला का प्रमुख केंद्र होने के कारण पर्यटक का केंद्र है यह चित्र यहां पर स्थित हवेलियों की दीवारों पर बने हैं।

नवलगढ़ – नवलगढ़ राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित एक शहर है जो अपनी उत्कर्ष हवेलियां व यहां की भित्ति चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है नवलगढ़ में स्थित पोद्दार की हवेली, बगड़ हवेली और अनाड़ी कुंड प्रमुख आकर्षण का केंद्र रहा है नवलगढ़ की हवेलियों को "ओपन आर्ट गैलरी" भी कहा जाता है।

फतेहपुर – इस क्षेत्र में स्थित नडियां हवेली, गोयनका हवेली और फतेह चंद हवेली भित्ति चित्रण के कारण प्रसिद्ध है यहां कई हवेलियों को हेरिटेज होटल में परिवर्तित किया गया है।

सीकर – सीकर जिले में स्थित यहां के गढ़, मंदिर, हवेलियों के भित्ति चित्र तथा यहाँ का म्यूजियम देखने व निहारने योग्य है। सीकर जिले में स्थित जीण माता मंदिर, हर्ष मंदिर प्रसिद्ध है, विशेषकर की हर्ष मंदिर जो कि अपने इतिहास व अपनी मूर्ति कला व वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है यहां से हमें दिक्पालों, अप्सराओं तथा अन्य देवी देवताओं की 10 वीं सदी की मूर्तियां प्राप्त होती है जो की कला व संस्कृति की दृष्टि से विशेष प्रसिद्ध है।

खंडेला – सीकर जिले की तहसील खंडेला भी एक पर्यटक स्थल के लिए उत्तम स्थान है यहां पर स्थित गढ़ व मंदिर उल्लेखनीय योग्य है यहां पर स्थित एक ओमल– सोमल का मंदिर है जो की खंडेला से लगभग 5 से 6 किलोमीटर दूर सेलिदीपुरा नामक गांव में एक पहाड़ी पर स्थित है इस मंदिर पर बनी प्राचीन मूर्तियां अद्वितीय है जो की लगभग 1000 साल पुरानी है।

खाटूश्याम जी मंदिर – यह मंदिर सीकर जिले के रींगस शहर से लगभग 17 से 18 किलोमीटर दूर स्थित है यहां पर श्रद्धालु बड़ी संख्या में आते जाते हैं और मंदिर में शीश झुकाते हैं।

झुंझुनू – झुंझुनू में रानी सती मंदिर, मोदी एवं कानोरियाँ हवेली प्रसिद्ध है रानी सती का वार्षिक मेला हजारों श्रद्धालु लोगों को आकर्षित करता है।

चूरू – चूरू में स्थिति सालासर बालाजी मंदिर, मालजी का कामरा, सुराणा हवेली और तालेड़ी हवेली प्रसिद्ध है चूरू की स्थापत्य कला मुगल व राजस्थानी कला का संयुक्त उदाहरण है।

शेखावाटी में पर्यटन की स्थिति

शेखावाटी क्षेत्र अपनी भित्ति चित्रकला, हवेलियों और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध रहा है यह क्षेत्र ओपन आर्ट गैलरी के नाम से प्रसिद्ध है परंतु इसकी अपार पर्यटक संभावना होने के बावजूद भी यहां का पर्यटन विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पाया है।

राजस्थान पर्यटन विभाग के अनुसार वर्ष 2023 में शेखावाटी क्षेत्र में लगभग 6.8 लाख घरेलू और विदेशी पर्यटक आए हैं जो कि राज्य में आने वाले कुल पर्यटकों का 4–5 प्रतिशत का हिस्सा ही है वहीं राज्य स्तर पर राजस्थान में लगभग वर्ष 2023–24 में 1.79 करोड़ घरेलू और 1.70 लाख विदेशी पर्यटक आए हैं।

वर्ष 2025 के पहले 6 माह में राजस्थान सरकार और न्यूज रिपोर्ट के अनुसार शेखावाटी में 2 करोड़ से ज्यादा पर्यटक आए है।

शेखावाटी में 662 हेरिटेज हवेलियों की पहचान की गई है जिन्हें पर्यटक और संरक्षण के लिए महत्व दिया जा रहा है हवेलियों की पुनरुद्धार योजना के तहत पर्यटन विभाग ने झुंझुनू, सीकर और चूरू जिले में 8 कस्बों को जोड़ते हुए हेरिटेज सर्किट बनाने की योजना बनाई है ताकि इन हवेलियों का संरक्षण हो सके और पर्यटन को बढ़ावा मिल सके।

शेखावाटी के पर्यटन के आंकड़े

वर्ष	स्वदेशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल योग
2012	196942	42860	239802
2013	187167	36136	223303
2014	243089	46828	289917
2015	86555	37420	123975

प्रगति प्रतिवेदन 2014–15 पर्यटन विभाग राजस्थान

	वर्ष 2016	वर्ष 2016	वर्ष 2017	वर्ष 2017	वर्ष 2018	वर्ष 2018	वर्ष 2019
	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी	देशी
झुंझुनू	127687	24477	174883	35999	178833	39802	187434
सीकर	102282	826	152416	1941	179927	2278	195185

प्रगति प्रतिवेदन 2019–20, पर्यटन विभाग राजस्थान के अनुसार वर्ष 2016–19 तक के आनेवाले पर्यटकों की संख्या

जिला	देशी	विदेशी	राज्य में देशी पर्यटकों का हिस्सा	राज्य में विदेशी पर्यटकों का हिस्सा	राज्य में देशी पर्यटकों के आने पर जिले का स्थान	राज्य में विदेशी पर्यटकों के आने जिले का पर स्थान
सीकर	3335328	1079	3.08	0.27	14	15
झुंझुनू	1204616	4239	1.11	1.07	22	11
चूरू	3578318	185	3.30	0.05	11	25

प्रगति प्रतिवेदन 2022–23, पर्यटन विभाग राजस्थान

	वर्ष 2023	वर्ष 2023	वर्ष 2024	वर्ष 2024
जिला	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी
सीकर	26336316	736	27661349	1192
झुंझुनू	1928926	24437	1865269	57266
चूरू	4222496	463	5004404	359

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

प्रगति प्रतिवेदन 2024–25, पर्यटन विभाग राजस्थान

पर्यटन से आर्थिक और सामाजिक लाभ

आर्थिक लाभ – पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार की उपलब्धता होती है होटल व्यवसाय, गाइड, हस्तशिल्प, लोक गायन व नृत्य आदि के माध्यम से धन कमाया जाता है।

जब स्थानीय हवेलियों को होटल में बदलेंगे तो विदेशी मुद्रा को अर्जित करने में वृद्धि होंगी।

पर्यटन से शेखावाटी के स्थानीय शिल्प जैसे की बंधेज, मोती का काम, लकड़ी की नक्काशी और मिट्टी कला को बाजार मिलेगा।

सामाजिक लाभ – पर्यटन ने स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को वैश्विक पहचान दिलाई है साथ ही पर्यटन के माध्यम से हम हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर का संरक्षण कर सकते हैं।

शेखावाटी पर्यटन की प्रमुख चुनौतियां

संरक्षण की कमी – शेखावाटी क्षेत्र में स्थित पर्यटक स्थलों को संरक्षण सही तरीके से नहीं मिल पा रहा है। गुजरते समय के साथ में यहां के स्थित मंदिरों तथा अन्य पर्यटक स्थलों को क्षति पहुंच रही है कुछ मंदिरों को पुरातात्विक विभाग ने अपने अधीन ले रखा है परंतु उनके संरक्षण और पुनः निर्माण की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। उदाहरण ओमल –सोमल मंदिर व हर्ष मंदिर।

अवसंरचना – शेखावाटी में सार्वजनिक परिवहन व होटल सुविधाएं अभी भी समिति अवस्था में ही है यहां की कच्ची टूटी हुई सड़कों से भ्रमण में पर्यटकों को असुविधा का सामना करना पड़ता है।

प्रचार–प्रसार की कमी – शेखावाटी के पर्यटन स्थलो का प्रचार प्रसार उतना नहीं है जितना की राजस्थान के अन्य स्थान जैसे उदयपुर, जयपुर और जोधपुर का है।

निजी स्वामित्व की समस्या– कई हवेलियाँ निजी स्वामित्व में है जिनके मालिक शहरों में रहते है उनके अभाव में हवेलियाँ जर्जीर हो रही है।

पर्यावरण समस्या – शेखावाटी में स्थित पर्यटन स्थल धूप, वर्षा तथा ठण्ड के कारण जर्जीर अवस्था में आ रही है

पर्यटन विकास की संभावनाएं –

- हेरिटेज होटल का विस्तार किया जा सकता है।
- स्थानीय कलाकारों के द्वारा भित्ति चित्र कार्यशालायें आयोजित की जाए तो विदेशी पर्यटक आकर्षित होगें।
- ग्रामीण जीवन कृषि पर्यटन और लोक संस्कृति को जोड़कर एक नए पर्यटन मॉडल का विकास किया जा सकता है।
- परिवहन अथवा यातायात की सुविधाओं को बेहतर करके पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।
- राज्य व केंद्र सरकार शेखावाटी क्षेत्र के पर्यटन के लिए योजनाएँ बना सकते है।
- स्थानीय लोगों में हमारी ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति जागरूकता लाने हेतु कुल अभियान या कार्यक्रम विद्यालय,महाविद्यालय स्तर पर जिला व राज्य स्तर पर किये जा सकते है।

निष्कर्ष

शेखावाटी का पर्यटन भारतीय कला, स्थापत्य और संस्कृति को अपने अंदर जीवंत रखता है यहाँ की हवेलियां व मंदिर ना केवल भव्यता के प्रतीक है बल्कि भारतीय, राजस्थानी व शेखावाटी की संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं व इतिहास का प्रतीक भी है जो हमारे गौरवमय इतिहास व संस्कृति से न केवल हमारी आने वाली पीढ़ियों को बल्कि सम्पूर्ण विश्व को बताती है साथ ही पर्यटन स्थल रूप में राज्य तथा देश की अर्थव्यवस्था में सहायता प्रदान करती है और बेरोजगारी जैसी समस्याओं का समाधान करती है।

यदि सरकार, स्थानीय निकाय, एनजीओ और कलाकार मिलकर संरक्षण और विकास पर कार्य करें तो शेखावाटी क्षेत्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्तर पर अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ

- प्रताप,रीता. भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास,2019
- भारती, कासीवाल, मीनाक्षी. भारतीय मूर्तीकला एवं स्थाप्तय कला,
- धरेंद्र, पंकज. प्रकाशित शोध, टेम्पल आर्किटेक्चर एण्ड स्कलप्चर ऑफ आर्ट शेखावाटी,2015
- जाखड., कुमार, जयंत. 17–18 वी शताब्दी में शेखावाटी के नगरों के भित्ति चित्र, प्रकाशित शोध पत्र, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
- Tourism Statistics- Rajasthan, Rajasthan Tourism Department,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

https://www.tourism.rajasthan.gov.in

- Article on Shekhawati Tourism, The Free Press Journal

https://www.freepressjonal.in

- Tourism in Shekhawati Rerion, The Time of India

https://www.indiatime.com